Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278,
https://www.srjis.com/issues_data/220
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, AUG-SEPT 2023, Vol-11/59
https://doi.org/10.5281/zenodo.8397970

सतत विकास में पर्यावरणीय शिक्षा की भूमिका

ललित कुमार
असि. प्रोफेसर, बी.एड. विभाग, स्वामी देवानंद पी.जी. कालेज,मठ–लार देवरिया एवं शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, 273009, भारत

उदय सिंह
प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, 273009, भारत

Paper Received On: 25 August 2023

Peer Reviewed On: 20 September 2023

Published On: 01 October 2023

Abstract

सतत विकास विकास की ऐसी प्रक्रिया है जिसमें विकास आने वाली पीढ़ियों तक भी अनवरत जारी रहेगा। अगर विकास सिर्फ वर्तमान पीढ़ी के लिए किया जाए तो आने वाली पीढ़ी को फिर उसी स्तर से विकास कार्य की शुरुआत करनी होगी, जहां से वर्तमान पीढ़ी ने किया। अर्थात बार–बार एक ही स्तर पर कार्य में ऊर्जा खर्च होगी। इससे बचने का एकमात्र तरीका यही है कि विकास की ऐसी प्रक्रिया अपनाई जाए, जिसमें निरंतरता हो। सतत विकास के अंतर्गत प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग करने पर बल दिया जाता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो न सिर्फ हमारे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने पर बल देती है, बल्कि उनके दुरुपयोग पर भी रोक लगाती है। साथ ही यह विकास की ऐसी अवधारणा है जो सिर्फ कुछ लोगों को ही नहीं बल्कि सभी के विकास को एक समान महत्वपूर्ण मानती है। पर्यावरण संरक्षण तथा सतत विकास एक–दूसरे के पर्याय हैं। उद्योग एवं तकनीकी के अंधाधुंध विकास ने हमारे समक्ष कई ऐसी पर्यावरण समस्याएँ खड़ी कर दी हैं जो मानव जाति एवं अन्य जीवों के लिए प्राणघातक सिद्ध हो सकती हैं तथा इन पर नियंत्रण न किया गया तो हमारी पारिस्थितिकी जिस पर हमारा समाज एवं अर्थव्यवस्था निर्भर है, तबाह हो सकता है। पर्यावरण शिक्षा लोगों को पर्यावरण के संरक्षण के प्रति सतर्क करती है तथा सतत विकास को प्रोत्साहित करती है।

प्रस्तावना –

सतत विकास की अवधारणा का जन्म पर्यावरण नीति कार्यक्रम परियोजनाओं पर चल रहे बहस तथा इस अध्ययन के बाद तय हुआ कि आर्थिक विकास, गरीबी और पर्यावरण इन सभी के बीच बहुत गहरा रिश्ता है। सही अर्थ में गरीबी और पर्यावरण तथा निम्न आर्थिक प्रदर्शन के साथ गरीबी में वृद्धि, गरीबी में वृद्धि के कारण पर्यावरण क्षरण इत्यादि के अध्ययन से सतत विकास का जन्म हुआ।

सतत विकास का अर्थ :– सतत विकास के लिए टिकाऊ, संपोषणीय, धारणीय, वहनीय विकास इत्यादि शब्द भी उपयोग किए जाते हैं। यह विकास के इष्टतम स्तर को संदर्भित करता है जो पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना संसाधनों के इष्टतम उपयोग से प्राप्त होता है। सतत विकास वह विकास है जो भावी पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

को पूरा करता है। इसलिए, पर्यावरण की रक्षा के बिना विकास को अनवरत एवं स्थाई नहीं बनाया जा सकता है। आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच वांछित संतुलन बनाए रखना सतत विकास है। इसके बाद पूंजी, कुशल, श्रम तकनीक आदि के प्रयोग के बावजूद यदि अधिक से अधिक विकास करने का प्रयास किया गया तो पर्यावरण को स्थायी रूप से हानि होने लगी है। इसी तरह, विकास का यह स्तर लंबे समय तक स्थाई नहीं रह सकता। सतत विकास की यह अवधारणा पर्यावरण के अनुकूल विकास के साथ–साथ भावी पीढ़ियों के लिए संसाधनों को बचाने पर केंद्रित है।

1987 में, संयुक्त राष्ट्र ब्रंटलैंड आयोग ने स्थिरता को "भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करने" के रूप में परिभाषित किया। आज, दुनिया में लगभग 140 विकासशील देश अपनी विकास आवश्यकताओं को पूरा करने के तरीके तलाश रहे हैं, लेकिन जलवायु परिवर्तन के बढ़ते खतरे को देखते हुए, यह सुनिश्चित करने के लिए ठोस प्रयास किए जाने चाहिए कि आज का विकास भविष्य की पीढ़ियों पर नकारात्मक प्रभाव न डाले।[1]

सतत विकास की अवधारणा को वैश्विक स्तर पर 1992 के पृथ्वी शिखर सम्मेलन में विकास हेतु एजेंडा–21 में स्वीकार किया गया तथा विश्व के देशों को विकास के नए तरीके से देखने एवं नियोजित करने की सलाह दी गई थी। हालांकि इसके पूर्व ही बर्टलैण्ड कमीशन ने सतत विकास की अवधारणा स्पष्ट कर दी थी।[2]

केन्द्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट मामलों की मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन ने संसद में आर्थिक समीक्षा 2018–19 पेश की। जिसमे बताया कि "भारत अपनी सतत विकास, जलवायु परिवर्तन, संसाधन दक्षता और वायु प्रदूषण से संबंधित विभिन्न नीतियों और उपायों को शुरू और लागू करके अपने आर्थिक प्रगति के लक्ष्य और रख–रखाव लगातार बनाए रखता है।" समीक्षा में बताया गया कि 2030 का वैश्विक एजेंडा अपनाने में देश गरीबी, लैगिंक भेदभाव, आर्थिक असमानता से मुक्त विश्व के निर्माण के लिए आगे आ रहे हैं जिससे भावी पीड़ियों के लिए स्वस्थ ग्रह सुनिश्चित किया जा सके। यह लक्ष्य बहुआयामी और विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरण संबंधी आयामों को एकीकृत करते हैं। भारत अपने 2030 के सतत विकास लक्ष्यों के लिए विभिन्न योजनाओं की शुरूआत करके समग्र पहुंच का अनुशरण करता है। भारत का एसडीजी सूचकांक स्कोर राज्यों के लिये 42 और 69 के बीच केन्द्र शासित प्रदेशों के लिए 57 और 68 के बीच है। केरल और हिमाचल प्रदेश सभी राज्यों में 69 –69 स्कोर के साथ सभी राज्यों में सबसे आगे हैं। चंडीगढ़ और पुदुचेरी सभी केन्द्र शासित प्रदेशों में क्रमशः68 और 65 स्कोर के साथ आगे हैं।[3]

सतत विकास के लक्ष्य (एसडीजी) को प्राप्त करने के लिए भारत सरकार ने स्वच्छ भारत मिशन, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, प्रधानमंत्री आवास योजना, स्मार्ट सिटी योजना, दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना, प्रधानमंत्री जनधन योजना, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, नमामि गंगे मिशन तथा अन्य योजनाएं शामिल हैं।

सतत विकास के लक्ष्य एवं उद्देश्य

2015 में संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देशों द्वारा 2030 के देशों, वर्तमान और भविष्य के लोगों और देशों में शांति और समृद्धि के लिए सतत विकास का एक साझा खाका प्रदान किया गया है। इसके केंद्र में 17 सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) हैं, जो वैश्विक भागीदारी वाले सभी देशों द्वारा विकसित और उन्नत करने के लिए एक जरूरी कदम है। उनका मानना है कि गरीबी और अन्य अभावों को समाप्त करने के लिए जलवायु परिवर्तन से मुक्ति और हमारे महासागरों और क्षेत्रों को संरक्षित करने के लिए भी काम किया

जाना चाहिए।[4] सतत विकास के प्रमुख लक्ष्य असमानता को कम करना, गरीबी एवं भुखमरी को समाप्त करना तथा अपने ग्रह की रक्षा करना है जिसके लिए प्रमुख उद्देश्य निम्नबत है ;

गरीबी उन्मूलन : इस लक्ष्य का लक्ष्य दुनिया भर से अत्यधिक गरीबी को मिटाना और पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के अनुपात में इसे कम से कम आधे से कम करना है।

भुखमरी को समाप्त करना : इसका उद्देश्य भूख से मुक्त दुनिया बनाना और कुपोषण से होने वाली बीमारियों और मौतों को रोकना है।

अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली : टिकाऊ जीवन का यह उद्देश्य सभी के लिए कुशल स्वास्थ्य देखभाल, स्वस्थ जीवन शैली और निवारक उपायों को बढ़ावा देता है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा : यह सुनिश्चित करना कि छात्रों को मुफ्त प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा और सस्ती उच्च और तकनीकी शिक्षा प्राप्त हो।

लैंगिक समानता : इसका उद्देश्य महिलाओं को समान राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक समानता देना है ताकि उनके लिए अधिक अवसर पैदा किए जा सकें।

स्वच्छ पानी और स्वच्छता : दुनिया भर में आबादी को स्वच्छ पानी उपलब्ध कराना ताकि उन्हें बेहतर स्वच्छता की स्थिति मिल सके।

सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा : यह ऊर्जा दक्षता में मदद करती है और जलवायु परिवर्तन शमन और आपदा जोखिम में कमी के लिए नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ाती है।

सभ्य कार्य और आर्थिक विकास : राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुसार प्रति व्यक्ति आर्थिक विकास को बनाए रखें। सबसे कम विकसित देशों में प्रति वर्ष कम से कम 7 प्रतिशत सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि होनी चाहिए।

उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढाँचा : आर्थिक विकास और सामाजिक कल्याण का समर्थन करने के लिए विश्वसनीय, टिकाऊ और लचीला बुनियादी ढाँचा विकसित करना।

असमानता कम करें : इसका उद्देश्य असमानताओं को कम करना है ताकि सभी को समान मौका मिले और सामूहिक रूप से सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

टिकाऊ शहर और समुदाय : यह सुनिश्चित करना कि हर किसी के पास किफायती आवास की स्थिति और परिवहन तक पहुंच हो। इसका उद्देश्य दुनिया भर में स्थायी मानव निपटान योजना को अनुमति देना है।

सतत उपभोग और उत्पादन : इसमें पर्यावरणीय गिरावट से आर्थिक विकास को अलग करना, स्थायी जीवन शैली को बढ़ावा देना और संसाधन दक्षता बढ़ाना शामिल है।

जलवायु परिवर्तन : इसका उद्देश्य जलवायु परिवर्तन और जीवन बचाने पर इसके प्रभावों का मुकाबला करना है। इसका उद्देश्य 2030 तक वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को 43 प्रतिशत और 2050 तक शुद्ध शून्य तक कम करना है।

जल के नीचे जीवन : इसका उद्देश्य महासागरों और इससे मिलने वाले संसाधनों के बारे में समझ पैदा करना है। यह हमारे समुद्रों को साफ़ रखने के लिए सीखने की पद्धतियों पर भी ध्यान केंद्रित करता है।

भूमि पर जीवन : इसका उद्देश्य स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करना, पुनर्स्थापित करना और स्थायी उपयोग को बढ़ावा देना, मरुस्थलीकरण से निपटना और भूमि क्षरण को उलटना है। पारिस्थितिकी तंत्र का ध्यान रखना महत्वपूर्ण है क्योंकि ये कच्चा माल और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं प्रदान करते हैं।

शांति, न्याय और मजबूत संस्थान : चूंकि संघर्ष, कमजोर संस्थान और सीमित पहुंच सतत विकास के लिए खतरा पैदा करते हैं। इसलिए, शांति को बढ़ावा देना और समावेशी समाजों को सुविधाजनक बनाना महत्वपूर्ण है।

लक्ष्यों के लिए साझेदारी : सरकार, समाज, निजी क्षेत्रों, संयुक्त राष्ट्र और नागरिक समाज को सतत विकास के प्रत्येक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वैश्विक भागीदार के रूप में कार्य करना चाहिए।

सतत विकास नीतियों के व्यवहारिक क्रियान्वयन में निम्न बातों पर विशेष बल दिया जाता है;

1. संसाधनों के कम या बगैर प्रयोग के विकास नीतियों का निर्धारण करना।
2. संसाधनों की कम से कम बर्बादी या नुकसान पर बल।
3. ऐसी विकास नीतियों का निर्माण जिनसे संसाधनों का संरक्षण संभव हो सके।
4. किसी भी प्रकार की आर्थिक या विकास की गतिविधियों के परिणामस्वरूप पर्यावरण को होने वाले नुकसान व प्रदूषण पर रोक लगाने वाली विकास नीतियों का निर्माण।
5. नीति एवं कार्यक्रम बनाने के उद्देश्य हेतु विकास की अवधारणा के तीन अंतर संबंध घटकों में विभाजित किया है जिसके अंतर्गत, स्वास्थ्य वृद्धि मूलक अर्थव्यवस्था, सामाजिक समानता के प्रति वचनबद्धता और पर्यावरण का संरक्षण सम्मिलित हैं।

स्थिरता और सतत विकास के बीच संबंध

सतत विकास स्थिरता की मानक अवधारणा से जुड़ा हुआ है जो एक दीर्घकालिक लक्ष्य है। सतत विकास का तात्पर्य स्थिरता प्राप्त करने के लिए जीवन जीने के एक तरीके से है। स्थिरता के विभिन्न प्रकार निम्नलिखित हैं;

पर्यावरणीय स्थिरता : यह प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और वैश्विक पारिस्थितिक तंत्र की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार है। इस प्रकार की स्थिरता का उद्देश्य पारिस्थितिक तंत्र को नुकसान पहुँचाए बिना मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है। इसमें हमारे दैनिक जीवन में ऊर्जा और संसाधन का विश्लेषण शामिल है। विशेषज्ञ वनों की कटाई जैसे कारकों की भी पहचान करते हैं जो पर्यावरण के लिए हानिकारक हैं। इसका उद्देश्य उन पर्यावरणीय प्रथाओं को अपनाना है जो हमारे पारिस्थितिकी तंत्र को बेहतर और शुद्ध करती हैं।[5]

सामाजिक स्थिरता : यह स्थिरता का एक और स्तंभ है जो लोगों पर व्यावसायिक प्रक्रियाओं के नकारात्मक और सकारात्मक प्रभाव की पहचान करता है। व्यवसायों को सामाजिक स्थिरता के लिए पहल करने की आवश्यकता है क्योंकि वे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से समुदाय को प्रभावित करते हैं। कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) व्यवसाय संचालन के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है ताकि संगठन हमारे समुदाय और पर्यावरण कल्याण में योगदान दे सकें। जबकि व्यवसाय समाज पर सकारात्मक प्रभाव छोड़ते हैं, वे अपनी पहल के साथ नवाचार भी लाते हैं। इससे उन्हें नए बाजार क्षेत्रों का पता लगाने का अवसर मिलता है।

आर्थिक स्थिरता : यह स्थिरता का एक और महत्वपूर्ण पहलू है जो दीर्घकालिक आर्थिक विकास का समर्थन करता है। इसका उद्देश्य समुदाय के पर्यावरणीय और सामाजिक पहलुओं पर कोई नकारात्मक प्रभाव डाले बिना ऐसा करना है। आर्थिक स्थिरता प्राकृतिक संसाधनों के इष्टतम उपयोग, पुनर्चक्रण और पुनर्प्राप्ति के माध्यम से उनके दीर्घकालिक टिकाऊ वर्तमान और भविष्य के मूल्य का निर्माण करती है।

सतत विकास एवं पर्यावरण शिक्षा

पर्यावरणीय शिक्षा ज्ञान तथा कौशलों का एक ऐसा समूह है जिसकी सहायता से लोगों को प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवेश के अंतर्संबंधो का ज्ञान कराया जाता है तथा सतत विकास

को प्रोत्साहित किया जाता है। हमें जीवन शैली के उन मानकों से परिचित कराती है जिससे प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग हो सके तथा उनको संरक्षित किया जा सके । आर्थिक विकास के लिए वैकल्पिक साधनों के उपयोग पर भी बल देती है जिससे प्राकृतिक संसाधनों के ह्रास एवं पर्यावरणीय समस्याओं को कम किया जा सके। पर्यावरण हमारे जीवन को सहारा देता है उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी हम सब की है तथा हमारा अस्तित्व कहीं न कहीं उसके अस्तित्व से जुड़ा है । प्राकृतिक संसाधनों का भण्डार काफी सीमित है तथा इसका उपयोग यदि सही ढंग से नहीं किया गया एवं इसके हनन को रोकने के उपाय नहीं किए गये तो आने वाले वर्षों में इसकी कमी मानव जाति तथा अन्य जीवों को नष्ट कर सकती है। अतः ऐसे वैकल्पिक संसाधनों एवं युक्तियों को खोजने की आवश्यकता है जो प्राकृतिक संसाधनों पर हमारी निर्भरता कम करे तथा इनका संरक्षण कर सके साथ–ही–साथ दुनिया के सभी देश विशेष रूप से विकाशील देश अपना आर्थिक विकास सतत रूप से बिना पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए कर सके।
उद्योगों एवं तकनीकी के अंधाधुंध विकास ने प्रदूषण, वनों का कटाव, मृदा–क्षरण, अम्लीय वर्षा, वन्य जीवन का ह्रास, ग्लोबल वार्मिंग जैसी प्राणघातक समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं अतः यह आवश्यक है कि उद्योगों एवं तकनीकी के विकास की दिशा पर विचारशील चिंतन किया जाए उन वैकल्पिक युक्तियों की खोज की जाए जिसके फलस्वरूप समाज के आर्थिक विकास एवं प्रकृति के बीच समरसता एवं सामंजस्य स्थापित हो सके। पर्यावरण शिक्षा द्वारा लोगों को पर्यावरण समस्याओं, वैकल्पिक संसाधनों एवं युक्तियों तथा सतत विकास के प्रति जागरूक किया जाए।

सतत विकास को प्रभावशाली बनाने के लिए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा पर्यावरण समस्याओं पर नियंत्रण हेतु पर्यावरण शिक्षा द्वारा '3 आर' के सूत्र – रिड्यूस (कम करना), रिसाइकिल (पुनर्चक्र) तथा रियूज (पुनरुपयोग) को बढ़ावा दिया जाता है। प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के फलस्वरूप निकलने वाले व्यर्थ पदार्थ को ऐसे पदार्थ में परिवर्तित कर दिया जाए जो तुलनात्मक रूप से कम हानिकारक हो। प्राकृतिक संसाधनों के स्थान पर वैकल्पिक संसाधनों को उपयोग में लाया जा सकता है जो वातावरण को कम नुकसान पहुँचाती है, साथ–ही–साथ प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण भी करते हैं। मल (सीवेज) या कारखानों से निकलने वाले गंदे पानी को पुनर्चक्र द्वारा उपयोग में लाया जा सकता है। उद्योगों के ऐसे उत्पाद (जैसे– प्लास्टिक, रबड़ इत्यादि) जिनका जैविक रूप से विघटन नहीं होता उन्हें पुनर्चक्र द्वारा बार–बार उपयोग में लाया जाए ताकि हमारा पर्यावरण सुरक्षित रहे।[6]

आज दुनिया का हर देश आर्थिक विकास की होड़ में लगा हुआ है तथा कई ऐसी परियोजनाएँ एवं आर्थिक विकास नीतियाँ अपनायी जा रही हैं जो पर्यावरण सुरक्षा के लिए प्रतिकूल हैं। विकसित देश के लोगों की जीवन शैली जो यूँ तो सभ्य कहलाती है किन्तु पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिकोण से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करती प्रतीत होती हैं, वहीं दूसरी ओर विकासशील एवं अविकसित देश भी अपने नागरिकों की जरूरतों को पूरा करने तथा अन्य देशो से अधिक विकसित बनने की प्रतिस्पर्धा में त्वरित गति से औद्योगिक विकास में लगे हुए हैं। आर्थिक विकास की यह प्रतिस्पर्धा न केवल क्षेत्रीय या राष्ट्रीय स्तर पर वरन वैश्विक स्तर पर भी ऐसी पर्यावरण विपदाएँ (जैसे– ग्लोबल वार्मिंग) पैदा कर रही हैं जो यदि इसी तरह बनी रहे तो यह पृथ्वी पर मानव तथा कई अन्य जीवों के जीवन को तबाह कर सकती हैं। अतः आज हमारे समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यदि कोई है तो वह यह है कि किस प्रकार लोगों में नैतिक रूप से तर्क करने की क्षमता का विकास हो जिससे वे न केवल पर्यावरण के महत्व को समझे वरन वे पर्यावरण संरक्षण एवं आर्थिक विकास से जुड़े नैतिक सरोकारों पर गंभीरता पूर्वक विचार कर सके।

उपसंहार

पर्यावरण शिक्षा द्वारा इन नैतिक सरोकारों पर विशेष बल दिये जाने की नितांत आवश्यकता है। किन्तु आश्चर्य की बात यह है कि पर्यावरण शिक्षा जो सतत विकास को प्रोत्साहित करती है आज भी सबसे अधिक उपेक्षित अध्ययन का विषय है। यह हमारे जीवन को सहारा देने वाले तंत्रों से हमें अवगत कराती हैं, साथ–ही–साथ यह हमारे आर्थिक विकास से भी नजदीकी रूप से जुड़ी हुई है। कई ऐसी परिस्थितियाँ जिसमें हमे विकास तथा पर्यावरण में से किसी एक को चुनना होता है, पर्यावरण शिक्षा नैतिक रूप से ऐसा निर्णय लेने के लिए तैयार करती है जो समाज के विकास तथा पर्यावरण की सुरक्षा दोनों के बीच संतुलन बनाये रखने में सक्षम हो अतः शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किये जाने के साथ–साथ इसके समुचित क्रियान्वयन के लिए पर्यावरणीय शिक्षा को प्रौढ शिक्षा में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. देखें (23/07/2023); https://www.un.org/en/academic-impact/sustainability
2. **भारत 2030 के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के लिए समग्र दृष्टिकोण अपनाता है,** देखें (23/07/2023) ; https://pib.gov.in/Pressreleaseshare.aspx?PRID=1577042
3. **सतत् विकास क्या है। सतत् विकास के उद्देश्य**, देखें (23/07/2023); https://www.mountainratna.com/2021/10/sustainable-development.html
4. देखें (23/07/2023); https://sdgs-un-org.translate.goog/goals?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc#icons
5. शर्मा, जे. (2023) **सतत विकास का महत्व और उसके उद्देश्य**, देखें (23/07/2023) ; https://www.shiksha.com/online-courses/articles/importance-of-sustainable-development-and-its-objectives/
6. **पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास,** देखें (23/07/2023) ; https://www.samajkaryshiksha.com/2022/07/environmental-conservation-and.html?m=1

Cite Your Article as:
LALIT KUMAR, & DR. UDAY SINGH. (2023). SATAT VIKAS MAIN PARYAWARN SHIKSHA KI BHUMIKA. Scholarly research journal for humanity science & english language,, 11(59), 10–15. https://doi.org/10.5281/zenodo.8397970